आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (16-31 दिसम्बर, 2025)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं संबंधित जानकारी

फसल मौसम 2025-26

भारत में गेहूं की बुवाई इस समय अच्छी गति से चल रही है और पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में कुल रकबे में वृद्धि दर्ज की गई है।. मानसून के बाद उपलब्ध मिट्टी की नमी ने फसलों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाई हैं। हालांकि, पंजाब और हरियाणा के कुछ हिस्सों में धान की देर से कटाई और अधिक वर्षा के कारण बुवाई में कुछ देरी देखी गई है। इसके बावजूद, अधिकांश किसान निर्धारित समय सीमा के भीतर बुवाई पूरी कर रहे हैं। कुल मिलाकर, 2025-26 फसल सीजन के लिए रुझान सकारात्मक बना हुआ है।

सामान्य सुझाव

- ✓ अपने क्षेत्र की देर से बुआई के लिए उपयुक्त और रोग-प्रतिरोधी किस्म ही चुनें; अन्य क्षेत्रों की किस्में लगाने से रोग का जोखिम बढ़ता है।
- ✓ नाइट्रोजन की पूरी मात्रा बुआई के 40-45 दिन के भीतर पूरी कर लें और यूरिया हमेशा सिंचाई से ठीक पहले दें ताकि इसकी दक्षता बढ़े।
- ✓ इनपुट (उर्वरक, सिंचाई, कीटनाशक/शाकनाशी) का संतुलित उपयोग करें और सिंचाई सोच-समझकर करें, जिससे पानी की बचत के साथ अधिकतम उत्पादकता सुनिश्चित हो सके।
- ✓ सिंचाई से पहले मौसम पूर्वानुमान अवश्य देखें और वर्षा की संभावना होने पर सिंचाई न करें, ताकि पानी भराव जैसी समस्याओं से बचा जा सके।
- ✓ फसल में रतुआ रोग की नियमित निगरानी करें और संक्रमण दिखने पर नज़दीकी अनुसंधान संस्थान, राज्य कृषि विश्वविद्यालय या कृषि विज्ञान केंद्र से तत्काल सलाह लें।
- ✓ पिछली फसल के अवशेषों को न जलाएँ; इन्हें मिट्टी में मिला दें। यदि सतह पर अवशेष मौजूद हों, तो गेहूं की बुआई के लिए हैप्पी सीडर या स्मार्ट सीडर का उपयोग करें, जिससे बुआई में देरी नहीं होगी और मिट्टी की कार्बन मात्रा भी बढ़ेगी।
- ✓ गेंहू की फसल में यूरिया की टॉप-ड्रेसिंग हमेशा सिंचाई से ठीक पहले करें, ताकि पौधों द्वारा पोषक तत्वों का अवशोषण अधिकतम हो सके।

उत्तरी, पूर्वी और मध्य भारत में देर से और बहुत देर से बुवाई के लिए गेहूं की किस्में

विविधता	उत्पादन की स्थितियाँ	क्षेत्र
देर से बोई जाने वाली किस्में		
पीबीडब्ल्यू 752, पीबीडब्ल्यू 771, डीबीडब्ल्यू 173, जेकेडब्ल्यू 261, एचडी 3059, डब्ल्यूएच 1021	सिंचित, देर से बोया गया, 25 दिसंबर तक	**एनडब्ल्यूपीजेड:** पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजनों को छोड़कर) और पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू और कश्मीर के कुछ भाग (जम्मू और कठुआ जिले) और हिमाचल प्रदेश के कुछ भाग (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तरांचल (तराई क्षेत्र)
डीबीडब्ल्यू 316, पीबीडब्ल्यू 833, डीबीडब्ल्यू 107, एचडी 3118, जेकेडब्ल्यू 261, पीबीडब्ल्यू 752		**एनईपीजेड:** पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और पूर्वोत्तर राज्यों के मैदानी इलाके
एचडी 3407, एचआई 1634, सीजी 1029, एमपी 3336		**सीजेड:** मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान का कोटा और उदयपुर संभाग और उत्तर प्रदेश का झाँसी संभाग

विविधता	उत्पादन की स्थितियाँ	क्षेत्र
देर से बोई जाने वाली किस्में		
बहुत देर से बोई जाने वाली किस्में		
एचडी 3271, एचआई 1621, डब्ल्यूआर 544	सिंचित, बहुत देर से बोया गया, 25 दिसंबर के बाद	सभी क्षेत्र

बुआई का समय, बीज दर और उर्वरक प्रयोग: बुवाई का समय पिछली फसल की कटाई पर निर्भर करता है।

गेहूं की फसल के लिए क्षेत्रवार बुवाई बीज दर और खाद की मात्रा

क्षेत्र	बुवाई की स्थितियाँ	बीज दर	उर्वरक की खुराक और उपयोग का समय
एनडब्ल्यूपीजेड और एनईपीजेड	सिंचित देर से बोया गया	125 किग्रा/हेक्टेयर	120:60:40 किग्रा एनपीके /हेक्टेयर (बुवाई के समय 1/3 N और पूरा P & K बेसल के तौर पर और बाकी N पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर हिस्सों में)
सीजेड और पीजेड	सिंचित देर से बोया गया	125 किग्रा/हेक्टेयर	90:60:40 किग्रा एनपीके /हेक्टेयर (बुवाई के समय 1/3 N और पूरा P & K बेसल के तौर पर और बाकी N पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर हिस्सों में)

सिंचाई और पोषक तत्वों का प्रयोग

- ✓ किसानों को बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली सिंचाई करने की सलाह दी जाती है।
- ✓ नाइट्रोजन की खुराक बुवाई के 40-45 दिन बाद तक पूरी कर लेनी चाहिए। सिंचाई से ठीक पहले यूरिया डालें।
- ✓ कुछ क्षेत्रों में गेहूं की फसल में पीलापन एक समस्या है, जो अत्यधिक सिंचाई, अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से पोषक तत्वों के निष्क्रिय होने, नाइट्रोजन (निचली पत्तियों), सल्फर (नई पत्तियों), मैग्नीशियम (पुरानी पत्तियों में शिराओं के बीच क्लोरोसिस) की कमी या धुंध भरे मौसम के कारण हो सकती है। परिस्थितियों के अनुसार निवारक उपाय किए जाने चाहिए। यदि पाला पड़ता है, तो हल्की सिंचाई की जा सकती है। मैग्नीशियम की कमी के लिए 35-40 दिन बाद 0.5% मैग्नीशियम सल्फेट को 3% यूरिया के साथ मिलाकर छिड़काव करें। सल्फर की कमी के लिए सिंचाई से पहले 3 कि.ग्रा. सल्फर उर्वरक डालें।
- ✓ अगेती बुवाई वाले उच्च उर्वरता वाले गेहूं के लिए, क्लोरमेक्वाट क्लोराइड 50% एसएल, वाणिज्यिक उत्पाद का 0.2% + टेबुकोनाजोल 25.9% ईसी, वाणिज्यिक उत्पाद का 0.1% के टैंक मिश्रण का पहला छिड़काव प्रथम नोड अवस्था (50-55 डीएएस) पर 160 लीटर/एकड़ पानी का प्रयोग करके किया जा सकता है।

खरपतवार प्रबंधन (शाकनाशी स्प्रे)

- गेहूं में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए क्लोडिनाफॉप 15 डब्ल्यूपी @ 160 ग्राम प्रति एकड़ या पिनोक्साडेन 5 ईसी @ 400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए 2,4-डी ई 500 मिली/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 20 डब्ल्यूपी 8 ग्राम प्रति एकड़ या कार्फेंट्राजोन 40 डीएफ 20 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें।
- यदि गेहूं के खेत में संकरी और चौड़ी पत्ती वाले दोनों खरपतवार हैं तो सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्ल्यूजी @ 13.5 ग्राम/एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन+मेटसल्फ्यूरॉन 80 डब्ल्यूजी 16 ग्राम/एकड़ को 120-150 लीटर पानी में मिलाकर पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10-15 दिन बाद इस्तेमाल करें। वैकल्पिक रूप से, गेहूं में विविध खरपतवार वनस्पतियों के नियंत्रण के लिए मेसोसल्फ्यूरॉन + आयोडोसल्फ्यूरॉन 3.6% डब्ल्यूडीजी @ 160 ग्राम/एकड़ का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- बहुशाकनाशी प्रतिरोधी फलारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) के नियंत्रण के लिए, बुवाई के 0-3 दिन बाद 60 ग्राम/एकड़ की दर से पाइरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का अकेले या पेंडिमेथालिन 30 ईसी 2.0 लीटर/एकड़ के साथ छिड़काव करें या बुवाई के 0-3 दिन बाद 150-200 लीटर पानी का उपयोग करके एक्लोनिफेन 450 + डाइफ्लुफेनिकन 75 + पाइरोक्सासल्फोन 50 (मैटेनो मोर) का तैयार मिश्रण @ 800 मिली/एकड़ का

छिड़काव करें या पहली सिंचाई के 10-15 दिन बाद 120-150 लीटर पानी का उपयोग करके क्लोडिनाफॉप + मेट्रिब्यूज़िन 12+42% डब्ल्यूपी का तैयार मिश्रण 200 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें।

पीला रतुआ रोग के लिए सलाह:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी गेहूं की फसल का नियमित रूप से निरीक्षण करें ताकि पीला रतुआ (स्ट्राइप रस्ट) और भूरा रतुआ का शीघ्र पता लगाया जा सके। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पीला रतुआ रोग के लक्षणों की पुष्टि के लिए गेहूं वैज्ञानिकों/विशेषज्ञों/विस्तार कार्यकर्ताओं को सूचित करें या उनसे परामर्श लें, क्योंकि कभी-कभी पत्तियों का पीलापन रोग के अलावा अन्य कारणों से भी हो सकता है। यदि किसानों को अपने गेहूं के खेतों में पीला रतुआ दिखाई दे, तो निम्नलिखित उपाय सुझाए जाते हैं:

• प्रोपिकोनाजोल 25 ईसी का एक स्प्रे अनुशंसित मात्रा में करें, अर्थात् एक मिलीलीटर रसायन को एक लीटर पानी में मिलाकर 200 मिलीलीटर फफूंदनाशक को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ गेहूं की फसल पर छिडकाव (स्प्रे) करें। अधिकतम प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए स्प्रे साफ मौसम में करें और बारिश, कोहरे या ओस से बचें।

दीमक नियंत्रण: देर से बोई जाने वाली फसल के लिए, दीमक प्रभावित क्षेत्रों में, उनके प्रबंधन के लिए क्लोरोपाइरीफॉस@0.9 ग्राम ए.आई./किलो बीज (4.5 मिली उत्पाद डोज/किग्रा बीज) से बीज उपचार किया जाना चाहिए। थायमेथोक्साम 70 डब्ल्यूएस (क्रूजर 70 डब्ल्यूएस) @ 0.7 ग्राम ए.आई./किलो बीज (4.5 मिली उत्पाद डोज /किग्रा बीज) या फिप्रोनिल (रीजेंट 5 एफएस @ 0.3 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज या 4.5 मिली उत्पाद डोज /किलो बीज) से बीज उपचार भी बहुत प्रभावी है। समय पर बोई गयी फसल में यदि दीमक का आक्रमण दिखाई दे तो इसे सिंचाई के पानी के साथ डालें।

गुलाबी तना छेदक नियंत्रण: गुलाबी तना छेदक कीट का प्रकोप कभी-कभी धान-गेहूं की फसल प्रणाली वाले खेतों में देखा जाता है जहां गेहूं को शून्य जुताई वाले खेतों में बोया जाता है। प्रभावित पौधे पीले पड़ जाते हैं और आसानी से जड़ से उखड़ जाते हैं। पौधों को उखाड़ने पर छेदक की गुलाबी रंग की इल्लियाँ दिखाई देती हैं। इसके प्रबंधन के लिए, गुलाबी तना छेदक दिखाई देते ही क्विनालफोस (ईकालक्स) 800 मिली/एकड़ का पत्तियों पर छिड़काव करें। सिंचाई से भी गुलाबी तना छेदक कीट से होने वाले नुकसान को कम करने में भी मदद मिलती है।

15/12/25

(रतन तिवारी)

निदेशक